वे सभी के लिए प्रार्थना करते है।

पं. श्री राधेलाल चौबे नरवर आश्रम के संस्थापक

''श्री नरवर आश्रम सेवा समिति'' मन्दिर श्री खोले के हनुमान जी के संस्थापक त्यागमूर्ति, तपोनिष्ठ, परम श्रद्धेय श्री राधेलालजी चौबे का जन्म जयपुर में कार्तिक शुक्ला द्वादशी (व्यंजन द्वादशी) सम्वत् 1986 तद्नुसार दिनांक 14 नवम्बर 1929 को हुआ। श्री राधेलालजी चौबे बिशनपुरा, जमवा रामगढ़, के मूल निवासी स्व. श्री सोनीलालजी के पौत्र एवं स्व. श्री वंशीधर जी चौबे के पांच पुत्रों में से दूसरे नम्बर की सन्तान हैं। अपने जीवन काल में ही किंवदंती बन चुके परम् मातृ-पितृ भक्त श्री चौबेजी ने समाज सेवा, अध्यात्म चेतना, भक्ति आराधना केन्द्रों की स्थापना, आत्मीय प्रेरक नेतृत्व के नये आयाम स्थापित कर नरवर आश्रम का चंहुमुंखी विकास किया है। शायद कोई और होता तो दस उपाधियां आगे पीछे जोड़कर मठाधीश बन जाता लेकिन आपने खोले के हनुमान जी में ऐसी परम्परा स्थापित की कि कोई महन्त, कोई गादी नहीं सिर्फ सेवक और सेवा, हनुमान जी भावना की तरह। हनुमान जी भी श्रीराम जी के सेवक ही बने रहना चाहते हैं।

बिशनपुरा जमवा रामगढ़ के जमींदार परिवार में जन्मा श्री चौबे जी का बचपन में आम बालकों की तरह पालन-पोषण हुआ। इनकी शिक्षा जयपुर के प्रसिद्ध महाराज संस्कृत कॉलेज में प्रवेशिका तक हुई। प्रारम्भ से ही इनकी रुचि, समाज सेवा, धार्मिक आयोजन व रचनात्मक गतिविधियों में रही।

सन् 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से अनेक छात्र अपनी पढ़ाई को तिलांजलि देकर आंदोलन में सम्मिलित हो गए थे। श्री मोहन लाल आजाद के नेतृत्व में श्री चौबे जी ने भी अपनी प्रवेशिका की शिक्षा छोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। आजादी के दीवानों का साथ देने के जुर्म में जेल भी जाना पड़ा। इसी दौरान आपने सन् 1947 में एक मण्डल की स्थापना की। राष्ट्र भक्त, उत्साही समाज सेवियों के इस दल का नाम रखा गया ''आजाद नवयुवक मण्डल'' इस दल के माध्यम से देश की समस्याओं से जूझते हुए रचनात्मक, सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न रहे। आपने 1960 में राष्ट्रीय सेवादल सहित अनेक संगठनों की स्थापना की। कबड्डी व अन्य देशी खेलों के शौकीन श्री चौबे जी ने राज्य व राष्ट्रीय स्तर की कबड्डी, बालीबॉल, खो-खो आदि प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई। भारत का यह समय परिवर्तनशील था। चुनाव प्रथा प्रारम्भ हो चुकी थी। कांग्रेस शासन ने देश की बागडोर संभाली थी। अपने दल के सदस्यों की प्रेरणा से इनको 1960 में स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ाया गया, असफल होने पर दोबारा 1970 में फिर खड़ा किया गया, किन्तु फिर भी असफलता ही हाथ लगी, क्योंकि प्रभु की इच्छा तो कुछ और ही थी। मगर इन सब गतिविधियों से निस्पृह रहकर चौबे जी अपनी समाज सेवा के कार्य में अनवरत लगे रहे।

श्री चौबे जी ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी और सुप्रसिद्ध कवि श्री तारा प्रकाशजी जोशी के वाहन चालक के रूप में कुछ वर्ष पंचायत विभाग में नौकरी भी की लेकिन खोले के हनुमान जी की तपोभूमि ने उन्हें बांध लिया और अपने पारिवारिक जीवन को त्याग कर, धर्मपत्नी और बच्चों का साथ छोड़कर हनुमत् सेवा में जुट गए।

आजाद नवयुवक मण्डल के अपने साथियों के साथ ये विभिन्न स्थानों पर होने वाले भजनों के आयोजन करने जाते थे। 1961 में संयोगवश ये सभी मिल कर एक दिन दिल्ली-आगरा हाइवे स्थित पानी की टंकी के पीछे पहाड़ियों के मध्य बनी खोल (पानी का झरना) जिसे नरवर दासजी की खोल के नाम से जाना जाता है, में गोठ मनाने हेतु गये। यह वो पवित्र तपोभूमि है जहां कभी परमसन्त नरवर ऋषि साधना, तपस्या किया करते थे। उन्हीं के नाम से इस स्थान का नाम नरवर दास जी का खोला पड़ा था। यहां नरवर ऋषि की साधना स्थली की निशानी बतौर एक जीर्ण झोंपडी विद्यमान थी व पानी की व्यवस्था के लिए एक कुआं बना हुआ था। वहां घूमते हुए श्री चौबे जी को भगवद् कृपा से एक पहाड़ी की चट्टान पर श्री हनुमान जी की आकृति का आभास हुआ, बस उसी क्षण चौबे जी की जीवनधारा को ही परिवर्तित कर दिया। सर्वप्रथम तो हनुमान जी की सेवा हेतु सामग्री जुटाई गई, चोला(सिन्दूर) धारण कराकर पूजा आराधना की गई व देवता को जगाने के अभियान का शुभारम्भ किया गया जो अब तक अनवरत जारी है। इसके पश्चात जन सामान्य को इस स्थान से जोड़ने

के लिए दल के लोगों ने चौबे जी के नेतृत्व में अथक परिश्रम किया। पानी की टंकी वाली पहाड़ी से लोगों का आयोजन करने के लिए प्रेरित कर आश्रम तक लाना, उनको वहाँ रसोई बनाने के लिए सामान (बर्तन, कण्डे व अन्य सुविधा) उपलब्ध कराना, उनकी पर्याप्त सेवा करना आदि से दस बीस लोगों को जोड़ना शुरू किया। दल के सदस्यों ने आपस में चन्दा कर व कुछ जनसहयोग प्राप्त कर मंदिर के कार्यकलापों को सुचारू रूप से जारी रखा। वहाँ झोंपड़ी आदि का निर्माण कराया गया।

बागवानी, यज्ञ, धार्मिक गतिविधिया अखण्ड रामायण आदि का निरन्तर आयोजन किया जाने लगा। किसी विद्वान ने शायद इन्ही के लिए कहा है:-

"मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर। लोग साथ होते गए और काफिला बना गया।" 1968 में श्रमदान द्वारा बनाई गई सड़क पर 1975 में राजस्थान सरकार द्वारा वहाँ पक्की डामर की सड़क का निर्माण कराया गया जिससे यहाँ आना बहुत ही आसान हो गया। प्रारंभ में मंदिर में एक रजिस्टर रहता था, जिसमें आने वाले भक्तजन प्रतिदिन अपना नाम-पता इन्द्राज करते थे। इससे पता चलता है कि किसी दिन 10, किसी दिन 15, मंगल के दिन 100-150। फिर सरकार के सहयोग से 1968 में बिजली भी आ गई। अब यहां रात्रि में भी रूकने में कोई परेशानी नहीं आती थी। श्री हनुमान मंदिर के शिखर पर भव्य राम मंदिर निर्माण कराया गया। वृहद योजना थी, अधिक बजट का कार्य था, किन्तु चौबेजी की कल्पना थी, साथ ही इच्छा शक्ति भी।

इसके निर्माण होने तक चौबे जी ने अन्न का त्याग कर दिया और देवता को शपथ पूर्वक निवेदन किया कि अब राम मंदिर निर्माण के पश्चात ही अन्न ग्रहण करूंगा। हनुमान जी ने भी भक्त की लाज रखी। कल्पना के अनुरूप ही कार्य पूर्ण किया। इसको साकार करने में चौबे जी भी पीछे नहीं रहे, उन्होंने अपनी पुश्तैनी जायदाद में से जमीन भी बेची लेकिन निर्माण कार्य में करणी नहीं रुकने दी। सियाराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के समय समिति की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं थी, फिर भी समिति के सदस्यों ने अपने बूते के हिसाब से सहयोग की घोषणा की। चौबे जी ने भी घोषणा की कि समारोह में कोई भी कमी नहीं आने दी जाए। जो भी पैसा कम पड़े वह मेरे नाम लिख दो और उन्होंने अपनी पुश्तैनी जायदाद में से 6 बीघा भूमि बेच दी। सात दिन का पूर्व घोषित समारोह एक माह तक चला।

इस प्रकार लगभग 44 वर्ष के छोटे से समय में नींव से शुरू हुआ सफर सात मंजिले विशाल भवन के शिखर तक पहुंच गया। इसके अतिरिक्त आश्रम का विस्तार समीप के क्षेत्र में भी हुआ। चौबे जी बताते है कि यह क्षेत्र सप्तर्षियों के मध्य स्थित है आश्रम के चारों ओर छः पक्की पत्थर वाली पहाड़िया पुरुष ऋषि व सातवी बालू वाली पहाड़ी स्त्री अरुन्धती है। इनके मध्य स्थित यह सुरम्य तपोभूमि कितनी पवित्र है, यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इन सभी पहाड़ियों पर भी चौबे जी ने विभिन्न मंदिरों का निर्माण कराया है। प्रेमभाया (श्रीकृष्ण) मंदिर, शिवमंदिर, गणेश मंदिर, एनीकट (भैरू जी का मंदिर) लक्ष्मण मंदिर, एक पर बालकों व यात्रियों के मनोरंजन के लिए बालू का टीला, एक पर पानी की टंकिया, चारों ओर वृक्षाच्छादित सुरम्य वन क्षेत्र। श्री हनुमान जी के मुख्य मंदिर के साथ ही विशाल परिसर में कुल सात शिवालय, नृत्य गणेश मंदिर व 2 अन्य गणेश मंदिर, सियाराम मंदिर, वेद मंदिर, प्रेम भाया (कृष्ण) मंदिर, गंगा माता मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, तेजाजी मंदिर, भैरूजी मंदिर व नरवर ऋषि मंदिर, इसके साथ ही अभी अष्टम पाटोत्सव के दौरान ही परमपूज्य गुरूदेव जानकी जीवनशरण जी की मूर्ति की भी स्थापना की गई है। इसके अतिरिक्त श्री सियाराम मंदिर के दाहिनी और गायत्री माता के मंदिर का निर्माण प्रगति पर है।

माता के मंदिर का निर्माण प्रगति पर है। जन सुविधाओं में गोठ करने के लिए अनेक पक्की रसोईयाँ, बिजली पानी सुविधा, बर्तन भण्डार सुविधा, पार्क, धर्मशाला, हौद, एनीकट, व माननीय उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह जी शेखावत की प्रेरणा से श्री आर.के.मार्बल वालों ने मंदिर में दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए एक लिफ्ट लगवाई गई है व नगर निगम की ओर से सुलभ केन्द्र का भी निर्माण प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त विशाल अन्न क्षेत्र, गौशालाऐं, पक्षीशाला, आयुर्वेद औषधालय, होम्योपैथिक औषधालय, प्याऊ व लोकल फोन सुविधा के साथ ही एक मिनी बाजार भी स्थापित है जहां जलपान के साथ ही भगवान के भोग की अनेक प्रसाद की दुकाने भी स्थित है।

76वें वर्ष में भी अत्यंत सक्रिय बाबा के परम कृपा पात्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सौम्य स्वभाव, लगन के पक्के अत्यंत परिश्रमी, संगठन क्षमता के धनी, उदारहृदय श्री राधेलाल चौबे अत्यंत ही सादगी पसन्द व्यक्ति है। चकाचौंध व प्रचार से बहुत दूर आज भी बिल्कुल सादा वेशभूषा में आप हनुमान जी के आस पास ही "श्रीराम जय राम जय जय राम" का जयघोष लगाते हुए आगन्तुक दर्शनार्थी भक्तों को अत्यंत ही आत्मीय भाव से स्नेहासिक्त करते रहते है।

श्री बृजमोहन शर्मा
प्रचार मंत्री